कल के लिए मत छोड़ो

- डा० विवेकानन्द
वैज्ञानिक "स" (क्षेत्रीय केन्द्र जम्मू)

किसी भी काम में सफलता पाने के लिए अपनी शक्ति एवं समय का यथार्थ ढंग से उपयोग करना चाहिए । कार्य तभी सफल होता है जब वह सुनियोजित, योजनाबद्ध तथा बिना आलस्य के किया जाए । आलस्य रूपी भूत कभी भी अपने अन्दर प्रवेश न कर पाये, इसलिए सदैव सतर्क रहना चाहिए । ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि --"आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों । ऐसी भी क्या जल्दी है, बहुत पड़े हैं बरसों ।।"

लेकिन कल कभी आता नहीं । कल की जगह 'काल' जरूर आ जाता है । लंका में राम-रावण का घोर युद्ध समाप्त हो चला था । रावण का अंतिम समय निकट जानकर भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण को बुलाया और कहा " लक्ष्मण ! अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योद्धा पंडित अब मर रहा है तुम उसके पास जाकर नीति-संबंधी कुछ शिक्षा प्राप्त करो "।

रामजी की आज्ञा शिरोधार्य करके लक्ष्मण जी प्रसन्नतापूर्वक चल दिए और रावण से धर्म और नीति से संबंधित शिक्षा देने की प्रार्थना की । धर्म एवं नीति की शिक्षा देने के उपरान्त उसने अपना सबसे मूल्यवान अनुभव बताने आरम्भ किए । रावण ने कहा, "लक्ष्मण ! मैं अपने जीवन में चार काम करना चाहता था :

i). लंका के आस-पास 100 योजन (एक योजन में सौ कोस, 200 मील अथवा 320 किमी. खारे समुद्र को मीठा करना ।
ii). सोने की लंका को सुगंधित बनाना ।
iii). स्वर्ग के लिए सीढियॉ लगवाना ।
iv). मृत्यु को पूरी तरह वश में करना ।"

अपने बल-बैभव के सम्मुख मुँझे ये चारों काम बहुत तुच्छ और सरल प्रतीत होते थे । सोचता था कि जिस दिन चाहूँगा, उसी दिन इन्हें पूरा कर लूँगा । जिन देवताओं के अधिकार में उपर्युक्त बातें हैं, उन्हें किसी दिन पकड़ लाऊँगा और चारों ही बातें पूरी हो जायेंगी । अपने अभिमान के कारण इन कामों को छोटा समझकर उपेक्षा की दृष्टि से देखता रहा और समय को टालता रहा ।

आज मेरा अन्तिम समय आ पहुँचा है और अब मैं इस दुनिया से जा रहा हूँ । चारों में से एक भी कार्य पूरा न कर सका, मन के अरमान मन में ही रह गये । देखता हूँ कि उपेक्षा, समय को टालना, अपनी शक्ति के गर्व में छोटे कार्य को सरल समझना और जिस काम को आज कर सकते हैं, उसे कल के लिए छोडना आदि मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी भूल है । यही भूल मुझे इस मृत्यु की घड़ी में दारूण दुख दे रही है ।

बात छोटी जरूर है, परंतु है बहुत ही महत्वपूर्ण । हमें भी सोचना चाहिए कि कहीं हम भी छोटे कामों की उपेक्षा करके उन्हें सही समय पर न करने की गलती तो नहीं कर रहे हैं । अतः सावधान

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में परलय होएगा, बहुरी करेगा कब ?
आलस कबहुं न कीजिए, आलस अरि सम जानि ।
आलस से विद्या धरे, बल बुद्धि की हानि ।

इसलिए हे दोस्तो, सहकर्मियों ! आलस्य रूपी शत्रु से अपना पिण्ड छुडाकर अपने उच्च उद्देश्य 'सर्वभूतहितेरताः' पर लक्ष्य केन्द्रित कर सर्वेश्वर 'परमेश्वर' के नाते कर्म को कर्मयोग बना लेंगे, सुख-दुख में समता बनाये रखेंगे, अपनी अमर आत्मा को पहचानने का पुरूषार्थ करेंगे और अमर पद पायेंगे । ऐसी अवधारण और दृढ़ प्रतिज्ञ कर्म ही जीवन की सार्थकता को चरितार्थ करती है ।

******

हिन्दी में कार्य करना सरल है, प्रारंभ तो कीजिए ।

- राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), भारत सरकार